International Journal of Research
e-ISSN: 2348-6848 & p-ISSN 2348-795X Vol-5, Special Issue-9
International Seminar on Changing Trends in Historiography: A Global Perspective
Held on 2nd February 2018 organized by **The Post Graduate Department of History. Dev Samaj College for Women, Ferozepur City, Punjab, India**

भक्ति अन्दोलन और श्री गुरू नानक देव जी

Pooja Prashar

HOD, Dept. of History, Dev Samaj college for Women, Ferozepur City, Punjab, India.

वीरपाल कौर

BA अंतिम वर्ष, रोल नंबर 1028, देव समाज कालेज फॉर वीमेन, फिरोजपुर, पंजाब

Abstract

भक्ति अन्दोलन का समय भारतीय इतिहास में 13 वी–14 वी ईसवी माना जाता है । हिन्दू धर्म के विकास में इस आन्दोलन का महत्वपूर्ण योगदान माना जाता है। यह वही समय था जब भारत के उच्च कोटि के सन्त मानव और मानवता को धर्म का केन्द्र मान कर केवल भक्ति के माध्यम से ईश्वर को पाने पर जोर देते थे। इसी समय पंजाब मे गुरू नानक देव जी का समय मिलता है। उनके धार्मिक विचार लोगो को सरल और मानवता वादी लगे। इस शोध पत्र के द्धारा मै भक्ति आन्दोलन के मुख्य सिद्धांतो को गुरू नानक देव जी द्धारा दिये गए उपदेशो से जोडकर यह समझाने का प्रयत्न करूँगी कि वो भी भक्ति आन्दोलन के ही महान सन्त थे और उनके विचार इस आन्दोलन से प्रभावित थे।

Keywords: पुरोहित , लंगर, Reformation, Renaissance.

भूमिका: भक्ति परमात्मा का संयोग प्राप्त करने के लिए भारतीय अध्यात्मिक दर्शन का एक प्रमाणिक साधन था। इस अनुसार मनुष्य स्वंय को भूला कर ईश्वर की प्राप्ति के लिए एक मन, एक चित्त हो कर भक्ति करता है । पंजाब में भक्ति आन्दोलन को चलाने वाले श्री गुरू नानक देव जी थे। उनका जन्म 15 अप्रैल ,1469 को पश्चिमी बंगाल में तलवंडी नामक स्थान पर

हुआ। उनकी माता का नाम तृप्ता देवी था। उनके पिता का नाम महता कालू था। इसमें कोई शक नही है कि श्री गुरू नानक देव जी सिक्ख धर्म के प्रवर्तक थे, पर सिक्ख धर्म में निसन्देह प्रथमता और प्रधानता भक्ति की है। भक्ति सिक्ख धर्म की मूल सच्चाई है। यह सिक्ख की बुनियादी आधार शिला मानी जाती है । भारत में 13 वी –14 वी शताब्दी में जो युग परिवर्तन भक्ति लहर युरोप की त्मवितउंजपवद ंदक त्मदपेंदबम के प्रसिद्ध धार्मिक एवं सांस्कृतिक जाति की लहरो के सामान पैदा हुई। सिक्ख धर्म उस बडे अन्दोलन की सबसे प्रभावशाली और क्रान्तिकारी अभ्यिकति थी। श्री गुरू नानक देव जी के आंरम्भिक सिद्धांत बिल्कुल रामानन्द , नामदेव और कबीर से मिलते थे। उनके जैसे श्री गुरू नानक देव जी ने ईश्वर की प्राप्ति के लिए नाम जपने या सिमरन करने पर जोर दिया । उनके उपदेशो का संग्रह श्री गुरू ग्रन्थ साहिब में मिलता है , जो सिक्खो का धार्मिक ग्रन्थ है। मध्यकाल के संतो में श्री गुरू

नानक देव जी का स्थान उच्च कोटि का है और उनका प्रभाव भी सबसे अधिक पड़ा। श्री गुरू नानक साहिब ने जपुजी साहिब में भक्ति का अर्थ स्पष्ट सूत्र में प्रकट किया :

गावीए सुनीए मन रखीऔ भाउ

दुख परहरि सुख घर लै जाए ।

इस तरह आसा की वार में

थाउ न पायन कुडियार

मुह काले दोजक चालिया

तेरे नाए रते से जिनी

गए हार गए सि ठगन वालियां

भक्ति में अहंकार का त्याग , नम्रता भाव, गुरू की शरण, परमात्मा के हुक्म की रजा मे रहना, नाम के रंग में या नाम के रस में मगन रहना, अति आवश्यक गुण है, जिनके बिना भक्ति नही हो सकती। भक्ति का जो उॅचा और सच्चा भक्ति स्थान गुरू साहिबान ने कायम किया। उसकी मिसाल धार्मिक साहित्य और इतिहास मे बहुत कम मिलती है। उच्च स्तर की नम्रता और गरीबी का भाव परमात्मा से जुडने के लिए अनिवार्य माना गया है। श्री गुरू नानक देव जी ने भाई गुरदास के शब्दो में नाम और गरीबी

International Journal of Research
e-ISSN: 2348-6848 & p-ISSN 2348-795X Vol-5, Special Issue-9
International Seminar on Changing Trends in Historiography: A Global Perspective
Held on 2nd February 2018 organized by The Post Graduate Department of History. Dev Samaj College for Women, Ferozepur City, Punjab, India

दो वरदान परमात्मा से प्राप्त हुए है। कई लोग अपनी उॅची जाति का मान करते है। श्री गुरू नानक सहिब अपने आपको नीच जाति का कहलवाकर प्रसन्न होते है।

हाउ ढाडी का नीच जात होर उतम जाति सदाइदे ।

भक्ति अन्दोलन और श्री गुरू नानक देव जी के सिद्धांतो मे समानता

यह ठीक है कि भक्ति अन्दोलन के प्रचारको और सुधारको ने भिन्न–भिन्न समय में अपने–अपने प्रदेशो में भिन्न–भिन्न सिद्धांतो का प्रचार किया लेकिन उन सबके मोलिक सिद्धांतो में कोई भिन्नता नही, बल्कि एक विशेष एकता थी। श्री गुरू नानक देव जी की शिक्षाऐ भी भक्ति लहर वाली थी। श्री गुरू नानक देव जी और भक्ति अन्दोलन के प्रचारको ने नीचे लिखे सिद्धातो पर जोर दिया।

एक ईश्वर में विश्वासः मध्यकालीन भारत के लोग एक सर्व शक्तिमान ईश्वर को भुल चुके थे और अनेक अवतारो, देवी देवताओ ,पैगंबरो , संतो और दरगाहो की पूजा करने में लगे हुए थे। भक्ति अन्दोलन के प्रचारको ने इस बुराई को जड़ो से उखाड़ दिया और एक सर्व शक्तिमान ईश्वर की पूजा पर जोर दिया । उन्होने बताया कि ईश्वर, अलाह, राम, विष्णु सब एक ही प्रभु के भिन्न –भिन्न नाम है। भक्ति अन्दोलन के प्रचारको को विश्वास था कि एक ईश्वर की पूजा करने से यहॅा के लोग पुरोहितो के अत्यचारो से बच सकते थे। वहॅा वे अन्य कई साम्प्रदायिक झगडो से भी दूर रह सकते थे। एक ईश्वर की एकता का सिद्धांत भक्ति अन्दोलन का प्रमुख सिद्धांत था। श्री गुरू नानक देव जी एक ईश्वर में अटल विश्वास करते थे। उन्होने अपनी रचनाओ मे जगह–जगह पर ईश्वर की महानता और महिमा के गीत गाए है । जपुजी साहिब के आरम्भ में दिये गये मूलमंत्र में उन्होने कहा है

एक ओमकार सतिनामु करता पुरखु निरभओ

निरवैर अकाल मुर्ति अजूनि सैभ

गुर प्रसादि जपु आदि सचु जुगादि सचु

है भी सचु नानक हो सी भी सचु

मूल मंत्र में दिये गये विचार की सारे जपुजी साहिब और श्री गुरू नानक देव जी की रचनाओ में व्याख्या की गई है।

आत्म समर्पणः भक्ति अन्दोलन के उपदेशको ने मनुष्य को अपनी ईच्छाओ और अहंकार को त्यागने पर जोर दिया है। मनुष्य अपने तन, मन, धन और सम्पति सब की कुरबानी करे। प्रत्येक बीमारी का कारण भी अहंकार ही है। ईश्वर की प्राप्ति के लिए इस अहंकार पर नियंत्रण करना जरूरी है । मनुष्य को अपनी इच्छा को प्रभु की इच्छा के अधीन रखना चाहिए। मनुष्य को अपने अन्दर किसी तरह के भी शरीरिक , मानसिक और अध्यात्मिक गुणो को उस प्रमात्मा की कृपा का ही फल समझना चाहिए। श्री गुरू नानक देव जी के अनुसार मनुष्य को अहंकार का त्याग कर देना चाहिए। मनुष्य को काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार आदि दुश्मनो को नियंत्रण में रखना चाहिये, जो मनुष्य ऐसा नही कर सकता वो मनुष्य नही है और इस तरह के मनुष्यो को ईश्वर की दया की प्राप्ति नही हो सकती। गुरू

की आज्ञा अनुसार चलने वाले अहंकार को अपने मन से निकाल देते है और उन्हे हुक्म अनुसार ईश्वर की दया दृष्टि प्राप्त होती है। उन्होने फरमाया है :

आप गवाईये तां शहु पाईये

आत्मा अमर हैः सभी भक्तो ने यह प्रमाणित किया है कि शरीर नाशवान है पर आत्मा अमर है। शरीर के नष्ट होने से आत्मा का नाश नही होता। आत्मा के होने से ही शरीर के भिन्न–भिन्न अंग अपनी– अपनी क्रिया करते है।

श्री गुरू नानक देव जी का विश्वास था कि आत्मा अमर है और मनुष्य के जीवन मे किये गये कर्मो के अनुसार ही उसकी शरीरिक मृत्यु के बाद किसी अन्य जीव में प्रकट होती है।

जाति पाति का विरोधः हिन्दू धर्म की अधोगति का मुख्य कारण जाति पाति और उॅच नीच का भेद भाव था। इसलिए भक्ति अन्दोलन के प्रचारको ने जाति पाति का जोर से खण्डन किया। उन्होने बताया कि जन्म के समय मनुष्य की कोई जाति नही होती, सब बराबर होते है। यह उॅच नीच और जाति पाति सब मनुष्य के बनाए हुए है । इसलिए यह सब गलत है। उन्होने बताया है कि सभी मनुष्य एक ही ईश्वर की सन्तान है । एक ही हाड मांस के बने है, इसलिए सभी बराबर है।

पंजाब में श्री गुरू नानक देव जी ने जाति पाति की कठोर निन्दा की और समानता लाने के लिए लंगर की प्रथा शुरू की, जहॅा पर हर जाति का मनुष्य बराबर बैठ कर खा सकता था।

मूर्ति पूजा का खण्डनः मध्यकालीन भारत में हिन्दू धर्म में मूर्ति पूजा बुरी तरह से प्रचलित थी। ईश्वर की मूर्तिया बनाकर उनकी पूजा की जाती थी । भक्ति अन्दोलन के नेताओ ने जारेदार शब्दो मे मूर्ति पूजा का विरोध किया । उन्होने बताया है कि ईश्वर

International Journal of Research
e-ISSN: 2348-6848 & p-ISSN 2348-795X Vol-5, Special Issue-9
International Seminar on Changing Trends in Historiography: A Global Perspective
Held on 2nd February 2018 organized by The Post Graduate Department of History. Dev Samaj College for Women, Ferozepur City, Punjab, India

मन्दिरो में नही है बल्कि ईश्वर तो कण–कण में समाया है। वो खुदा हर किसी की धड़कन में है । कोई भी मनुष्य उस प्रमात्मा को प्राप्त कर सकता है। मूर्ति पूजा के बारे में कबीर जी

लिखते है :

पाहन पूजे हरि मिले तो मै पूजू पहाड़

ता ते ये चाकी भली पीस खाये संसार

श्री गुरू नानक देव जी ने भी पंजाब में मूर्ति पूजा का खण्ड़न किया । उन्होने बताया कि ईश्वर का ना कोई आकार है, ना रंग और ना ही रूप है । इसकी मूर्तिया बनाना उसका निरादर करना है । इसके अतिरिक्त गुरू जी ने समाज में प्रचलित फालतू रीति रिवाजो और दिखावो की निन्दा की और धर्म के वास्तविक सिद्धांतो का प्रचार किया । उन्होने कहा कि कि क्षमा, सबर, सच, संयम आदि गुणो को अपनाना चाहिए और सच्चे दिल से ईश्वर का ध्यान करना चाहिये। गुरू जी लिखते है :

मुन्दा संतोखु सरम पतु झोली ध्यान की

करह भिबुति खिंथा कालु कुआरी

काइया जुगति डंण्ड़ा परतीति

;जपुजी साहिब पउड़ी

किसी भाषा को पवित्र ना माननाः भक्ति लहर के संतो ने इस बात को मानने से इन्कार कर दिया कि केवल संस्कृत ही पवित्र भाषा थी और इसके द्धारा ही ईश्वर ज्ञान की प्राप्ति की जा सकती थी। उन्होने बताया कि सच्चे हृदय से और पूरी श्रृद्धा से किसी भी भाषा में ईश्वर की भक्ति की जा सकती है। ईश्वर केवल संस्कृत ही नही बल्कि सभी भाषाए समझता

है।उपदेशको ने बताया कि हिन्दी,तामिल,मराठी ,अंग्रेजी और गुजराती सभी संस्कृत भाषा जितनी ही पवित्र है ।

श्री गुरू नानक देव जी संस्कृत या अन्य भाषा को धर्म की पवित्र भाषा नही मानते। उन्होने ब्राहमणो और पुरोहितो के इस विचार का खण्ड़न किया कि केवल संस्कृत में ही ईश्वर की प्रशंसा के मंत्र पडे जा सकते है । गुरू जी ने अपनी शिक्षाओ का प्रचार सामान्य भाषा में किया ।

मानव जाति से प्रेम और भाईचाराः सभी भक्ति अन्दोलन के प्रचारको ने मानव जाति से प्रेम और भाईचारे पर जोर दिया है क्योकि सभी मनुष्य एक ही परम पिता की सन्तान है। इसलिए सभी आपस में भाई– भाई है। रंग, रूप जाति और धर्म का भेदभाव किये बिना सभी के साथ अच्छा व्यवहार करना चाहिए जहॉ तक हो सके, उस प्रभु की दी हुई शक्तियो को

मानवता की सेवा में लगा देना चाहिए, क्योकि मानवता की सेवा, प्रभु सेवा के बराबर है।

श्री गुरू नानक देव जी के अनुसार , सभी मनुष्य प्रमात्मा की सन्तान है और आपस में भाई– भाई है। वास्तव में मनुष्य जाति में भाईचारे का भाव ईश्वर की एकता का ही आवश्यक नतीजा है । ईश्वर की ज्योति प्रत्येक मनुष्य में मौजूद है । इसलिए मनुष्य को चाहे वो किसी भी धर्म से सम्बध्ति हो, सभी से प्रेम करना चाहिए । गुरू जी ने अपने उपंदेशो का

आरम्भ ही इन शब्दो से किया था।

न कोई हिन्दू है ,ना कोई मुस्लमान

प्रभु भक्ति : भक्ति अन्दोलन से पहले मुक्ति प्राप्ति के लिए बलियां दी जाती थी, मंत्र उच्चारण किये जाते थे । तीर्थ यात्रा और उपवास रखे जाते थे, परन्तु भक्ति लहर के प्रचारको ने इन सब कामो को व्यर्थ और फिजुल बताया । उन्होने इस बात पर जोर दिया कि मोक्ष की प्राप्ति के लिए ईश्वर की श्रृद्धापूर्वक भक्ति करनी चाहिए । उस प्रभु की प्रशंसा का गायन करना चाहिए । दक्षिण मे संत रामानुजाचार्य ने यह उपदेश दिया कि सच्चे हृदय से एक ईश्वर की भक्ति की जाए तो मनुष्य मुक्ति प्राप्त कर सकता है। जयदेव ने अपनी पुस्तक ष गीत गोबिन्द ष में ईश्वर के गुणगान पर जोर दिया है।

श्री गुरू नानक देव जी ने अपनी बाणी में नाम के जाप पर जोर दिया है नाम से भाव उन वस्तुओ से है जो ईश्वर ने पैदा

की है। दूसरे शब्दो मे नाम का अर्थ सच्चाई है। जपुजी साहिब में गुरू जी ने एक जगह पर कहा है कि ष इस सारी

प्रकृति की रचना प्रमात्मा ने की है, वो सभी नाम है। नाम के बिना कोई जगह नही है सतिनामु जपने से मनुष्य का मन पवित्र हो जाता है और उसे ईश्वर की प्राप्ति होती है । जपुजी साहिब की 20 वी पउड़ी में गुरू जी कहते है कि जिस तरह हाथ पांव और शरीर की मैल पानी से और मैले

International Journal of Research
e-ISSN: 2348-6848 & p-ISSN 2348-795X Vol-5, Special Issue-9
International Seminar on Changing Trends in Historiography: A Global Perspective
Held on 2nd February 2018 organized by The Post Graduate Department of History. Dev Samaj College for Women, Ferozepur City, Punjab, India

वस्त्रो की मैल साबुन से धोने से निकल जाती है, उसी तरह मन के पापो की मैल को नाम जपने से दूर किया जा सकता है । एक और जगह पर वह कहते है कि नाम ही संसार के सभी दुखो एवं कष्टो की दवाई है। गुरू साहिब के कथन अनुसार जो लोग नाम सिमरन करते है उनकी मेहनत और प्रयत्न सफल होते है उन्हे मुक्ति की प्राप्ति हो जाती है । गुरू जी लिखते है :

जिनी नामु धियाईयां गए मस्कति घालि

नानक ते मुख उजले केति छुटि नालि

श्लोक पउड़ी 38 जपुजी साहिब

निष्कर्ष: उपरोक्त विचार विर्मश के बाद हम इस निर्ष्कष पर पुहचॅते है कि इसमें कोई संदेह नही है कि श्री गुरू नानक देव जी सिक्ख धर्म के प्रवर्तक होने के साथ– साथ भक्ति अन्दोलन के प्रमुख सन्त थे । उनके विचारो में से भक्ति अन्दोलन का जजबा साफ झलकता है । श्री गुरू नानक देव जी ने लोगो के दिलो से उच्च नीच , भेदभाव और झूठे रीति रिवाजो को निकाल कर भाईचारे की और उन्हे बढाया और उन्हे बताया कि सभी मनुष्य उस परमपिता की सन्तान है। उस खुदा को पाने के लिए मानवता की सेवा आवश्यक है। श्री गुरू नानक देव जी की सरल शिक्षओ से लोगो में प्रेम और भाईचारा पैदा हुआ और वह सभी परमात्मा को पाने के लिए सादा, सरल और पवित्र जीवन व्यतीत करने लगे । श्री गुरू नानक देव जी की सरल शिक्षाओ और उच्चे विचारो के कारण वे लागो में हरमन प्यारे बन गये और पंजाब में सिक्ख धर्म के प्रर्वतक होने के साथ– साथ भक्ति आन्दोलन के प्रचारको में भी उन्हे विशेष स्थान हासिल है।

REFERENCE

1. Dr. G.C. Narang: Transformation of Sikhism, New Book Society Publishers,1912.
2. Dr. Indu Bhushan Banerji: Evaluation of Khalsa, J. Chowdhury Publication, 1979.
3. Dr. Tara Chand: Influence of Islam or Indian Culture , Indian Press Ltd. Allahabad, 1946.
4. Syad Mohmand Latif: History of the Punjab, Kalyani Publishers , 1997.
5. Shiv Gajrani: Punjab Da Ithaas (1469-1799 AD) Madaan Publications , Patiala ,1990.